IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

वंचितो को सामाजिक न्याय दिलाने में गांधी जी एवं अन्य का योगदान

डॉ0 राकेश कुमार राम

जय प्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा

भारत में गॉधी जी वंचितो के अद्वितीय नेता थे। वे अहिंसा धर्म के मानने वाले योद्वा थे जो उस अंग्रेजी हुकूमत से भारत की करोड़ो जनता की आजादी के लिए आन्दोलन किये जिसका विश्व में फैले साम्राज्य में सूर्यास्त नही होता था। गॉधी जी ने भारत की दासता भोगी आम जनता किसानों ,मजदूरों, गांव के शिल्पियों अछुतों की दुर्दशा को बहुत निकट से देखा था। वे शुरु से यही मानते रहे कि भारत की जनता को एकजुट होकर ब्रिटिश साम्रज्यवाद को उखाड़ फेकना चाहिए और आजाद भारत में अपनी समस्याओं का हल ढूढ़ना चाहिए। उनके नेतृत्व में लगभग तीस वर्ष तक देश में आन्दोलन का दौर चला। इस प्रकार तीन दसक तक गांधी स्वतंत्रता आन्दोलन के प्रेरणा स्रोत बने रहे। उनके मार्गदर्शन में ही भारत की जनता ने देश की आजादी पायी।

निःसंदेह तैतिस वर्ष तक आजादी की जंग में गांधी जी ने सत्याग्रह का सफल प्रयोग किया उसका अभ्युदय सुदूर दक्षिण अफ्रिका में हुआ था। 1893 से 1914 तक उस अपरिचित देश में गांधी ने हर प्रकार की कठिनाइयों के बिच सत्याग्रह के इस अजेय अस्त्र का प्रयोग किया था। जनवरी 1915 को गांधी अपनी राष्ट्रिय पोशाक (काठियावाड़ी अंखरखा, धोती और सफेद साफा) पहने बम्बई बंदरगाह पर पत्नि कस्तूरबा के साथ उतरे। भारत की आजादी की लड़ाई का अभियान छेड़ा तथा उसे गतिशील बनाया। जनता को आकर्षित करने के लिए तरह–तरह के सामाजिक रचनात्मक और सत्याग्रह और राजनीतिक महत्व के कार्यक्रम चलाये। देश को नया राजनीतिक दर्शन दिया तथा अहिन्सा और सत्याग्रह के जरिये ब्रिटिश साम्राज्य को हिलाकर रख दिया। साथ ही सामाजिक विषमताओं–रुढ़ियों के खिलाफ आवाज उठाई।

उधर बाबा साहब डॉ0 भीम राव अम्बेडकर ने अमेरिका और लंदन में उंची शिक्षा समाप्त करने के पश्चात, पहले तो मंदिर–प्रवेश, सार्वजनिक जलाशयों से अछुतो द्वारा पीने का पानी लेने , कुरीतियां मिटाने और जातीय संगठन बनाने के विरुद्व अनेक कार्य किए, बाद में उन्होंने महसूस किया कि बिना सता प्राप्त किये सामाजिक परिवर्तन असंभव हैं। बाबा साहब डॉ0 भीम राव अम्बेडकर ने वास्तव में अनुसूचित जातियो/जनजातियों एवं वंचितो के सामाजिक–राजनितिक अधिकारों को प्राप्त करने के लिए लंदन में धर्म युद्व की शुरुआत कीं, लेकिन जब स्वतंत्रता ने भारत के द्वार पर दस्तक दी तब गांधी,सरदार पटेल और नेहरु ने ही कॉग्रेस और गांधीवादी दर्शन के प्रखर आलोचक बाबा साहब डॉ0 भीम राव अम्बेडकर को ही भारतीय जनता के आकांक्षाओ और सपनो को पूरा करने के लिए भारतीय संविधान की रचना हेतू प्रस्तावित मसौदे की प्रारुप समिति का अध्यक्ष बनाने में पहल करके दूरदशिता का परिचय दिया। इससे डॉ0 अम्बेडकर को भी दलितो की भावनाओं को संविधान की धाराओ में पिरोने का अद्वितीय स्वणिम अवसर प्राप्त हो गया जिसके लिए वे जीवन प्रयत्न संघर्षरत रहे।

राष्ट्पिता महात्मा गॉधी भारतीय इतिहास में परंपरागत और नए जीवन मूल्यों के प्रति निष्ठा के साथ–साथ नवजागरण को शंख फूकते रहे। उन्होने दो महायुद्वो के बीच भारत का स्वतंत्रता संग्राम लडा, असहयोग और अहिंसात्मक सत्याग्रह के जरिये। हजारो साल से परस्पर वैमनस्य और गुलामी का जीवन जिने की अभ्यस्त भारतीय जनता को उन्होने सोते हुए अवस्था से जगाया। उनमें राष्ट्यिता और देश प्रेम की भावना भरी, त्याग और सर्वस्व निछावर करने की विचार शक्ति पैदा

की। उनमें विश्वास जागृत किया कि वे स्वराज्य पाने के अधिकार हैं अपना शासन चलाने में सक्षम हैं। उन्होने धूल और मिट्टी में से नेताओ को पैदा किया । वे बड़ी जिम्मेदारी से कार्य करते थे। पूरे भारतीय जनमानस में स्वतंत्रता के प्रति अनुराग पैदा करने कि उनमें क्षमता थी। उन्होने पाश्चात्य दर्शन और जीवन शैली का अंधानुकरण करने के स्थान पर स्वदेशी की भावना अपनाने पर जोर दिया। उन्होने स्वर्ण हिन्दुओं को प्रेरित किया कि वे अनुसूचित जातियो/जनजातियों एवं वंचितो को अपना भाई समझे, उन्हें गले लगाये तथा अपने आप में परिवर्तन करें। यह सामाजिक परिवर्तन का एक प्रयोग था। दूरगामी परिणामों की दृष्टि से देखें तो गांधीवादियों द्वारा किए जानेवाले अनुसूचित जातियो/ जनजातियों एवं वंचितो के कल्याण कार्यो ने ग्रामिण समाज के निम्नतम और सबसे शोषित वर्गो तक राष्ट्वाद का संदेश पहुचाने का कार्य किया।

वंचितोउत्थान हेतू डा0 भीम राव अम्बेडकर ने अंत तक अपना धर्मयुद्व जारी रखा। वंचित आन्दोलन कि दिशा में 15 मार्च 1947 का दिन स्मारणीय रहेगा। अखिल भारतीय अनुसूचित जाति परिसंघ (आल इंडिया शिड्यूल्ड कास्ट फेडरेशन)की ओर से डा0 अम्बेडकर ने संविधान सभा में अनुसूचित जातियो/जनजातियों एवं वंचितो के हित संरक्षण के संवंध में ज्ञापन दिया। इसकी प्रस्तावना में डा0 अम्बेडकर ने लिखाः जब यह निश्चित हो गया कि भावी भारत का संविधान तैयार करने का कार्य संविधान सभा को सौपा जाने वाला है तो उसके बाद अखिल भारतीय अनुसूचित जाति परिसंध की कार्य समिति ने मुझसे कहा कि मैं वंचितो के सुरक्षापायो के विषय में एक ज्ञापन तैयार करु जिसे परिसंध कि ओर से संविधान सभा में प्रस्तुत किया जाय। इस ज्ञापन में मूल अधिकारों, अल्पसंख्यको के अधिकारों और अनुसूचित जातियों के सुरक्षापायों की परिभाषा दी गयी हैं। वंचित आन्दोलन की दिशा में 15 मार्च 1947 का दिन बड़ा महत्वपूर्ण है जब भारत की स्वतंत्रता की घोषणा से पांच माह पूर्व डा0 अम्बेडकर ने अखिल भारतीय अनुसूचित जाति संघ और एस0सी0एफ0 की, भारत के भावी संविधान में अनुसूचित जातियों/जनजातियों के हित संरक्षण के संवंध में ज्ञापन दिया। अनुसूचित जातियों/जनजातियों में यह बात दुहराई गयी हैं कि वंचित वर्गो की सामाजिक, आर्थिक और शैक्षिणिक स्थिति अन्य नागरिको और अल्पसंख्यकों की तुलना में इतनी खराब हैं कि उन्हें इस संरक्षण के अलावा जिसे वे नागरिकों तथा अल्पसंख्यको के नाते प्राप्त करेंगे, बहुसंख्यको के अत्याचार और भेदभाव के विरूद्व विशेष सुरक्षापायों की जरूरत होगी। दूसरा ज्ञापन यह हैं कि अनुसूचित जातियां अल्पसंख्यको से भिन्न है। यह ज्ञापन संविधान सभा में प्रस्तुत किया जाना था। डा0 अम्बेडकर ने इसे व्यापक लोकहित में पहले ही सार्वजनिक कर दिया । उन्होने स्पष्टतः कहा कि भारत के भावी संविधान के प्रस्तावित उद्देश्यों में अन्य देशवासियों के साथ सुविधावंचित वर्गों को बेहतर अवसर सुलभ कराते हुए सामाजिक ,राजनैतिक और आर्थिक विषमता दूर करने के प्रयास किए जाने चाहिए।

वंचितोउत्थान हेतू डा0 अम्बेडकर की तुलना में गांधी जी के योगदान को नही भुलाया जा सकता। गांधी जी भारत की राजनीति में लोक नेता के रूप में आंधी–तुफान की तरह आए। अपने जीवनकाल में ही वे एक उगते हुए सूरज बन गये थे।उनका मुख्य लक्ष्य देश की आजादी था। इसलिए गांधी अपने को व्यवहारिक आदर्शवादी मानते थे।यह उनके व्यक्तित्व की मुख्य विशेषता थी।व्यवहारिक आदर्शवादी एक–एक कदम सोच समझकर उठाते थे। भारत जैसे देश में तो और भी ज्यादा, रुढ़ियां, अंधविश्वास और कई प्रकार की विषमताए हावी थी।इन परिस्थितियों में सबको साथ लेकर चले बिना स्वराज्य की लड़ाई नही लड़ी जा सकती थी।इस विवशता से गांधी बहुत हद तक क्षुब्ध होते देखे गये। यहॉ तक की जीवन की आखिरी दौर को छोड़कर वे आजीवन वर्ण व्यवस्था के विरूद्व आंदोलन करते रहे। नेहरु, लोहिया,जयप्रकाश तथा कम्युनिस्ट नेताओं ने खुले शब्दो में यह नहीं कहा कि मंदिर जाने या न जाने में कोई फर्क नहीं पड़ता। असल मुद्वा जातिवाद और छुआछुत मिटाना हैं। गरीबी दूर मिटाना हैं। दूसरी ओर पारंपरिक प्रतिकों को नया अर्थ देने में कुशल गांधी ने भारतीय समाज के अनुसूचित जातियों/जनजातियों को हरिजन कहा । गांधी छुआ–छुत जरूर मिटाना चाहते थे, किन्तु इस हेतू वे स्वराज्य आंदोलन के लिए बनाये गये भारतीय जनता के मोर्चे में न तो दरार आने देना चाहते थे और न इसके बहाने अग्रेज सरकार को भारत में बने रहने का समय देना चाहते थे।गांधी अछुतो के हिन्दू समाज से अलग होने की बात से भी सहमत नहीं थें।इससे उनपर अंतर्विरोधी रूख लेने की तोहमत भी लगी। यही कि उन्होंने मुसलमानों और सिखों को तो अल्पसंख्यक होने के नाते विशेष अधिकार देना स्वीकार कर लिया, परंतु वंचितो के लिए पृथक निर्वाचन मंडल बनाने के बिरोध में आमरण अनशन पर बैठ गए।

गांधी जी ने 1920 में असहयोग आन्दोलन के साथ राष्ट्रिय आन्दोलन का नेतृत्व संभाला। तब से देश स्वाधीन होने तक वे उसके सर्वोच्च नेता रहे। इस बिच उन्होने देश और दुनिया कि कमोबेश सभी महत्वपूर्ण समस्याओं, घटनाओं, यहां तक कि प्राकृतिक चिकित्सा जैसे विषयों पर भी अपने विचार व्यक्त किए और लिखे। कई विषयों पर उनके विचारों में बदलाव आया। नए अनुभवों और बदली हुई परिस्थितियों में उन्होंने पुरानी मान्यताओ का मोह छोड़कर सर्वथा नई मान्यताये अपना ली। उन्होंने कहा कि कोई भी व्यक्ति अंतर्विरोधी बातें कहने के डर से अपनी नयी अनुभूतियों और अनुभवों के अनुसार अपने विचारों के विकास को

कैसे दबा सकता हैं। इसलिए जब उनसे पुछा गया कि आप अपने सत्याग्रह दर्शन की व्याख्या करते हुए एक ग्रंथ क्यों नहीं लिखते तो उन्होने हंस कर कह दिया, मेरे मन की बनावट विद्वानो की तरह लिखने की नही है। मैं कार्य करने वाला आदमी हूँ। आन्दोलन के लिए जरूरी विचारों और कार्यक्रमो की स्पष्टता के लिए जरूरी होने पर लिख भी लेता हूँ। इसलिए जब मेरे विचारों में कोई अंतर्विराध दिखे तो पुरानी बात को भुलकर नए कथन को मान्य करता हूँ। आज हम जानकारियों, विचारों, अवधारणाओं को निरंतर अपडेट करते रहते हैं।लेकिन इससे बहुत पहले गांधी ने यह प्रयोग आरंभ कर दिया था।

भारत रत्न बाबा साहब डॉ0 भीम राव अम्बेडकर इसके बिल्कुल विपरित थे, जिन्हें उनके अनुयायी पूरी श्रद्वा से बाबा साहब कहते हैं। डॉ अम्बेडकर जाति–पांति तोड़ने को सर्वोच्च प्राथमिकता देते थे।इस लक्ष्य को पूरा करने में उनको अंग्रेज सरकार से सहयोग लेने में कोई हिचक नही थी। वे स्वराज्य प्राप्त करने के लिए कांग्रेस के उतावलेपन और भारत को स्वतंत्र करने की अंग्रेजो की अनिक्षा का लाभ उठाकर अपने लोगो का भविष्य संवारने के लिए स्वंतंत्र भारत में उनके सामाजिक–राजनीतिक अधिकार सुरक्षित कर लेना चाहते थे। वे विद्वान भी थे और कर्मठ राजनीतिज्ञ भी।उनकी वैचारिकता पर विज्ञाननिष्ठा, आधुनिक सामाजिक चिंतन और पश्चिमी राजनीतिक–आर्थिक अवधारणाओं की गहरी छाप थी।उनका मानना था कि किसी भी प्रकार की सामाजिक क्रांति के लिए सुस्पष्ट विचारधारा जरूरी हैं। उन्होंने लिखा भी है कि मैं राजनीतिक सामाज–कार्य में होते हुए भी आजीवन विद्यार्थी हूँ। अध्ययनशील अम्बेडकर ने हिन्दू समाज व्यवस्था के दोष बताने और उसमे अंतर्निहित अनुवांषिकता को उजागर करने के लिए आधुनिक सामाजिक शास्त्रो का ही अध्ययन नही किया बल्कि इसके साथ ही उन्होने प्राचीन हिन्दू धर्मशास्त्रों केा भी बारिकी से पढा था।

गांधी जी और डॉ0 अम्बेडकर की पहली मुलाकात 14 अगस्त 1931 को बंबई के मणि भवन में हुई। प्रारंभिक औपचारिकताओं के तुरंत ही दलित समस्या पर दोनों में मतभेद स्पष्ट रूप से उभर कर आया। इन दोनों की बातचीत का विवरण पढ़े तो यह बात उभर कर आती हैं कि गाँधी और अम्बेडकर में संवाद नहीं सिर्फ विवाद हुआ। जहॉ गांधी का मुख्य उद्देश्य ब्रिटिश साम्राज्यवाद से भारत को आजाद करवाना था तथा आजादी के इस आंदोलन में सभी जातियों कि भागीदारी सुनिश्चित करना था, वही दूसरी ओर अम्बेडकर की मूल समस्या भारत की राजनीतिक आजादी के बजाय जाति प्रथा व सामाजिक अत्याचारों से मुक्ति कराकर वंचित लोगों को हिन्दू समाज में उनके मानवाधिकारों को दिलवाना था। अपने जगह पर गांधी जी की भी वंचितों को सामाजिक न्याय दिलाने में सराहनीय भूमिका रही हैं।

संदर्भ–सूचीः

1. विपिनचंद्र, इंडियन लैफट–क्रिटिकल एप्रैजलः एवं मृदुला मुखर्जी, पेजेन्ट्री एंड दी नेशनल इन्टैगोशम (जे0एन0यू0)
2. कुलकर्णी, सुमित्रा, अनमोल विरासत, पृ0–21
3. डॉ अम्बेडकर जन्म शताब्दि वर्ष में विश्वद्यालय अनुदान आयोग और भागलपुर विश्वद्यालय की एक विचार गोष्ठी में कन्हैयालाल चंचरीक के अम्बेडकर और गांधी वयख्यान (20,24 मार्च 1992) से उद्वृत पृ0–2
4. गिल , एस0एस0, गांधी–ए सबलाइम फैल्योर, पृ0–94
5. सरकार सुमित माडर्न इंडिया (हि0सं0), पृ372–73
6. डॉ0 अम्बेडकर संपूर्ण वाड्मय खंड 2 पृ0 169–171
7. फड़के य0दि0 , अम्बेडकरी चलवल, पृ0–34
8. गेरे, एम0एस0, दि सोशल कावन्टैक्ट ऑफ एन आइडियोलॉजी, पृ0–133
9. सरदार, गंगाधर बालकृष्ण, गांधी मणि अम्बेडकर,पृ0–10(गणेश मंत्री द्वारा उद्वृत)
10. लिमये मधु, डॉ अम्बेडकर एक चिंतन,पृ0–24 (गणेश मंत्री द्वारा उद्वृत)